व्यसन-कुरीति उन्मूलन

दुर्व्यसनों के फलस्वरूप उत्पन्न रोग-कलह, दरिद्रता, अपयश एवं पतन के निवारण के लिए सकारात्मक प्रयत्नों को प्रोत्साहन एवं इस आन्दोलन में समाज के युवा वर्ग की सक्रिय भूमिका एवं भागीदारी सुनिश्चित करना।

JSS-2B/32

तम्बाकू के धुएँ का विष
हाइड्रोजन साईनाईड
(गैस चैम्बर को दिया जाने वाला विष)
साईडस्ट्रीम धूंआ मैनस्ट्रीम से ज्यादा विषैला है क्योंकि इसमें निम्न की मात्रा ज्यादा है:
• निकोटीन २ गुना
• कार्बन मोनोओक्साईड ५ गुना
• टार २ गुना
• अमोनिया ७३ गुना
• वैंजपाईरिन ३ गुना
• कैडमियम २ गुना ज्यादा
एसीटोन
टोल्यूडीन
नैफ्थाईलेमीन
अमोनीया
मिथेनोल
यूरेथेन
पाईरिन
टोल्यीन
डाईमिथाईल नाईट्रोसेमीन
आर्सेनिक
नेफ्थालीन
डाईबेन्जाक्रिडिन
निकोटीन
फीनोल
केडमीयम
ब्यूटेन
कार्बन मोनोआक्साईड
पोलोनियम
बेन्जपाईरिन
डीडीटी कीटनाशक
विनायल क्लोराईड
मैनस्ट्रीम धूंआ बिना जली तम्बाकू में से होकर धूम्रपान कर रहे व्यक्ति के फेफड़ों में जाता है।

SMOKING
DRUG
ALCOHOL
EVERY 30 MINUTES SOMEONE IS KILLED
IN AN ALCOHOL-RELATED CRASH

भ्रूण में मदिरापान के प्रभाव

गर्भावस्था में मदिरापान से लाखों बच्चे जन्मजात दोष या मानसिक दोष से ग्रसित होते हैं जिससे उन्हें आगे चलकर अपने जीवन में अनेकों कठनाईयों का सामना करना पड़ता है। विघटोन के मनोविज्ञानिक प्रोफेसर ने शोध किया है कि र्भावस्था में शराब पीने के दुष्परिणाम जो भ्रूण में विधमान हैं ऐसे बच्चों के स्वास्थ्य सुधार में 8 लाख डालार से अधिक धन खर्च हो सकता है। सन् 2003 में अमेरिका को इसके लिये 5 लाख डालार खर्च करना पड़ा। अन्न क्लिन्त सोवा मनोविज्ञानिक ऐसे और भी नये प्रयोग कर रहें हैं जो इस रोग ग्रस्त बच्चों में सुधार ला सकता है।

“ क्या हमारा कोई फर्ज नहीं बनता कि हम अपने होने वाले बच्चे को एक अच्छा भविष्य दें....... ”

मदिरापान (शराब पीने) के दुष्परिणाम

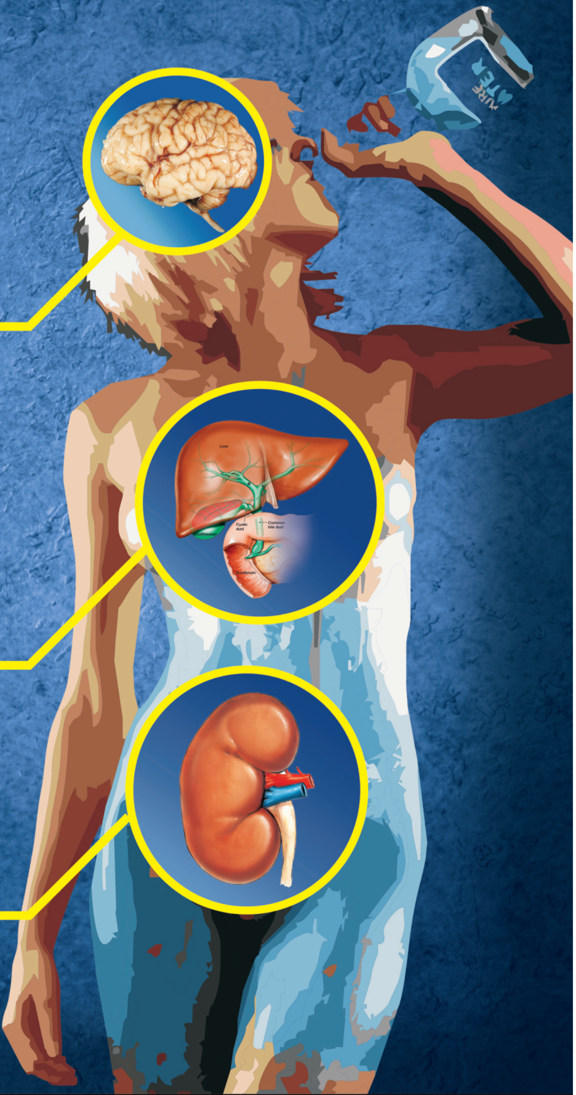

मस्तिष्क

(शराब) मदिरा पीते ही वह सीधी रक्त वहिनी में प्रवेश करके मष्तिष्क को प्रभावित करती है, जिससे निर्णय क्षमता की कमी और संकोच भावना पैदा होती है।

जिगर

शराब पीते ही शरीर के जल में घुलकर, जिगर को उत्तेजित करके गुर्दे में पहुँचती है।

गुर्दे

मूत्र द्वारा शराब को बाहर निकलने के लिये जिगर व गुर्दे पर अधिक दबाव पड़ता है और परेशान करने वाली भावनात्मक समस्यायें पैदा होती है।

नशे ने ढ़ाया कहर

देश में 60ल व्यक्ति शराब के कारण पागल होते हैं।

हमारे देश में 14 खरब रूपया प्रति वर्ष नशे की होली में फूंका जाता है।

हर पाँच में से एक की मृत्यु का कारण तम्बाकू है।

सिगरेट पीने से 25% हृदयाघात, 30% कैंसर एवं 75% अस्थमा होता है।

विश्व में 125 करोड़ व्यक्ति धूम्रपान के आदि हैं।

हमारे देश में प्रतिवर्ष धूम्रपान से मरने वालों की संख्या 4 लाख तक है।

व्यसन-कुरीति उन्मूलन

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कल संसार में 10,000 लोग धूम्रपान छोड़ेंगे। चौंक गये ना आप इन लोगों के आत्मविश्वास एवं संकल्पशक्ति को समझकर? विश्वास न हो तो फिर से पढ़िये। चौंकिए नहीं श्रद्धांजलि दीजिए ... क्योंकि कल उनका अन्तिम संस्कार होगा।

व्यसनों का विभन्न चिकित्सा पद्धतियों से उपचार

आज ही अपनायें -अपने को सुखी बनायें

पंचगव्य :
प्रातःकाल एवं सांयकाल में 25 मिव लीव लेने के पूर्व तीन बार गायत्री मंत्रोचारण के साथ सेवन करें।

यज्ञ :
मंत्रोच्चारित यज्ञ से धूल के धनात्मक आवेश खत्म होकर ऋणात्मक आवेश बढ़ते हैं जो मनुष्य के स्नायुतंत्र को प्रभावित कर नशा छुड़ाने में सहायक

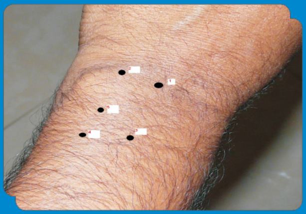

एक्यूप्रेशर विधिः
इन बिन्दुओं को लगातार प्रेशर करने से मनुष्य की इच्छाशक्ति जाग्रत होकर नशा छोड़ने में सहायक होती है।

उपासना द्वारा :
पूजा स्थल पर रखे कलश का जल शराब के स्थान पर प्रयोग करें। व्यसनी की माँ या पत्नी नित्य सद्बुद्धि की प्रर्थना करते हुए एक पेज गायत्रीमंत्र का लेखन करें और बलि वैश्व कर व्यसनी को भोजन करावें।

योग :
प्रार्थना, दीर्घश्वसन, प्राणायाम, ताड़न श्वसन, अर्धकटि चक्रासन, गोरक्षासन, भुजंगासन, पवनमुक्तासन एवं सर्वांगासन आदि आसन करने से भी लाभ प्राप्त होता है।

आयुर्वेद :
शराब की जगह घृतकुमारी अर्क का सेवन करें। अजवायन अर्क एवं सौंफ अर्क के नियमित सेवन से शराब की आदत छूट जाती है। अफीम के आदी व्यक्ति को अग्नितुण्ड वटी 2-2 गोली दिन में तीन बार देनी चाहिए। गांजा एवं भांग पीने वालों को इन्हीं (गांजा-भांग) के क्वाथ में 5-6 मुनक्का कुछ दिन तक देना चाहिए, बाद में धीरे-धीरे कम करके छोड़ देना चाहिए।

हमारा नशा उन्मूलन अभियान

नशे की सभी चीजें जैसे - शराब, बीड़ी, तम्बाकू, सिगरेट, गुटखा एवं पाउच जैसे दुर्व्यसन भारतीय समाज को खोखला एवं निकम्मा कर रहे हैं। इन्हें दूर करने के लिए युगऋषि ने सुसंगठित प्रबल अभियान चला रखा है। गोष्ठी, विचारमंच, कार्यशाला, पोस्टर, स्टीकर, साहित्य एवं मल्टीमीडिया के माध्यम से जन-जन को झकझोरने का प्रयास भी अनवरत चल रहा है। समाज देश एवम राष्ट्र निर्माण के पुनीत अभियान देकर महाकाल के युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया को गति प्रदान करे।

आइये हम सब इस निमित्त अपनी प्रतिभा, समय एवं श्रम का एकांश राष्ट्रोत्थान के पावन इस महाभियान में समर्पित करने का शुभ संकल्प कर मातृ ऋण, पितृ ऋण, और राष्ट्र ऋण को चुकाएं।